

कपास नई खोज



भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र

देखें: www.cicr.org.in

अंक: 2 खंड; 5 मई 11-17, 2014

एच.डी.पी.एस. एवं बी.टी कपास की खेती के कार्यशाला में सहभागिता



कृषि उपज विपणन समिति (ए.पी.एम.सी) द्वारा अकोला जिला के अकोट में आयोजित एच.डी.पी.एस एवं बीटी कपास की खेती के कार्यशाला में वैज्ञानिकों डॉ. ए.आर.राजु, डॉ. विनिता घोटमारे और डॉ.विश्लेष नगरारे ने भाग लिए। डॉ.राजु ने बेहतर उत्पादन प्रथाओं पर, डॉ. घोटमारे ने एच.डी.पी.एस. हेतु उपयुक्त किस्मों पर एवं डॉ.नगरारे ने कपास में प्रभावी कीट और रोग प्रबंधन पर भाषण दिया। वैज्ञानिकों ने किसानों से बातचीत की और आगामी कपास मौसम के दृश्य में किसानों के प्रश्नों के उत्तर दिए। प्रारंभ में, श्री. अशोक गैकवाड, उप-विभागीय कृषि अधिकारी, अकोट ने डॉ. पंजाबराव देशमुख के तस्वीर को फूल के माला पहनाकर कार्यशाला का उद्घाटन किया। श्री.रमेश हिंगनकर, ए.पी.एम.सी., अकोट के अध्यक्ष ने समारोह की अध्यक्षता की। बड़ी संख्या में पदाधिकारियों एवं लगभग 200 अकोट के किसान कार्यशाला में भाग लिए।



आई.एस.ओ प्रमाणीकरण में बैठक

के.क.अ.सं, नागपुर में दि.17.5.2014 को एक बैठक हुई जिसमें आई.एस.ओ प्रमाणीकरण और संस्थान के लिए आईएसओ प्रमाण पत्र प्राप्त करने के प्रक्रिया के बारे में जानकारी देने के लिए आयोजित की गयी। डॉ.आर.आर.लाके, निदेशक, श्रेयस प्रबंधन प्रणाली ने गैप विश्लेषण रिपोर्ट ड्राफ्ट गणवत्ता नीति और संस्थान के आई.एस.ओ प्रमाण पत्र के लिए कार्यान्वयन योजना के बारे में जानकारी दी। डॉ.के.आर.क्रांति निदेशक, के.क.अ.सं ने संस्थान के आई.एस.ओ प्रमाणीकरण के महत्व पर बल दिया। श्री.सचिन अग्निहोत्री, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने बैठक का समन्वय किया।

वैज्ञानिक वार्ता

डॉ.जे.अमुदा वरिष्ठ वैज्ञानिक, जैव प्रौद्योगिकी ने दि.17.5.2014 को के.क.अ.सं, नागपुर की अभिनव सेल के तहत "खाद्य उद्योग में कपास के पौधे और बिनौले का दूध" पर एक भाषण दिया। कपास कली, गुलर और बीज के प्रारंभिक चरण पौधा के एक खाद्य हिस्सा है। वसा रहित ग्रंथिहीन और वसा रहित गॉसिपाल रहित ग्रंथिवाले बीज से कपास आटा डायरी उत्पादों की तैयारी के लिए इस्तेमाल किया गया है। वसा रहित और गॉसिपाल रहित ग्रंथिवाले बिनौले की विवल्कित आटे के बिनौला दूध, दही, पनीर, आइसक्रीम, चॉकलेट, रोटी आदि तैयार करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। कपास कली और बिनौले दूध भारत के दक्षिणी भागों में बिरीयाणी, सूप और हलवे की तैयारी में इस्तेमाल किया जाता है। हाल ही में, कपास का दूध मॉडिस्चराइजिंग लोशन, शैंपू, कंडीशनर, त्वचा क्रीम एवं जड़ी बूटी (हर्बल) दवा आदि में उपयोग पाया गया है। कपास दूध एक अभिनव स्वास्थ्य पेय है और स्वाद में सुधार करने के लिए,सूक्रोज (2 प्रतिशत) और सोडियम क्लोराइड (0.2 प्रतिशत) शामिल किए गए।



टामाकई एक टोफू के समान उत्पाद है और जब ग्रंथिहीन बिनौला दूध से तैयार किया गया थो उसमें नरम स्वाद है। यह एक सॉसेज प्रकार मांस स्थानापन्न उत्पाद की तैयारी में उपयोग है और खाना पकाने में क्रीम पनीर के लिए एक विकल्प के रूप में प्रयोग किया जाता है। दो डायरी उत्पादों, दही (लाब्लाह) और सब्जी बिनौला दूध से तैयार दही (झबाडी) सामान्यतः मिस्र (इजिप्त) में खपत होती है। ग्रंथिहीन बिनौले आटा प्रोटीन ग्रंथिवाले आटे से एक हल्का रंग और मुलायम स्वाद है और रोटी बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है और इसमें पाचनशक्ति 91 % थी। बिनौला तेल सलाद तेल, सब्जियाँ तलने में, मांस, मेयोनेज़, सलाद ड्रेसिंग और इसी तरह के उत्पादों के रूप में इसकी स्वाद स्थिरता के कारण प्रयोग किया जाता है।

अंक: 2 खंड; 5 मई 11-17, 2014

आनुवंशिक रूप से संशोधित आलू “लेट ब्लाइट को विरोध करना”

ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने आनुवंशिक रूप से संशोधित आलू का विकास किया जो “लेट ब्लाइट” के लिए प्रतिरोधी रहे हैं। लेट ब्लाइट रोग किसानों को पीढ़ियों के लिए त्रस्त किए हैं और 1840 के दशक में आयरिश आलू अकाल के लिए जिम्मेदार भी थे। लेट ब्लाइट नियंत्रित करने में एक मुश्किल और महंगा रोगजनक है। किसान को एक मौसम में रोग के खिलाफ की रक्षा के लिए कई बार छिड़काव करना पड़ता है।

शोधकर्ताओं ने लेट ब्लाइट से लड़ने के लिए, दक्षिण अमेरिकी वन्य जाति से एक जीन को डेसिरी आलू में शामिल किए हैं। आनुवंशिक परीक्षणों तीन साल तक चालू थे। वर्ष 2012 के तृतीय वर्ष के अगस्त के परीक्षण में गैर आनुवंशिक संशोधित आलू लेट ब्लाइट से ग्रस्त थे जबकि संशोधित सब्जियाँ प्रयोग के अंत में पूर्ण रूप में प्रतिरोधी थे। वैज्ञानिकों की राय है कि आलू कंद बजाय बीज से बड़े हो रहे हैं, वे बाँझ हैं और जंगली में आनुवंशिक संशोधित पराग से बच निकलने का मुद्दा ही नहीं उठता। हालांकि, इस आनुवंशिक संशोधित फसल की वाणिज्यिक खेती से पहले यूरोपीय संघ के अनुमोदन की जरूरत है।

वैज्ञानिक संदर्भ:

<http://rstb.royalsocietypublishing.org/content/369/1639/20130087>

<http://www.bbc.co.uk/news/science-environment-26189722>

(इस अनुसंधान रॉयल सोसायटी बी की पत्रिका फिलासेफिकल ट्रान्साक्शन्स में प्रकाशित हुआ है)
श्रद्धा जायसवाल, परियोजना सहायक, फसल उत्पादन प्रभाग, के.क.अ.सं, नागपुर द्वारा योगदान किया गया है।

निर्मित एवं प्रकाशित: डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं, नागपुर

प्रमुख संपादक: डॉ. नंदिनी गोकटे-नाखडेकर

संपादकों: डॉ. जे.एन्नि शीबा, डॉ. विश्लेष नगरारे, डॉ. जे.अमुदा एवं डॉ. एम.शरवणन

जनसंचार माध्यम समर्थन एवं रूपांकन: डॉ. एम.सबेष एवं श्री. एस.सत्यकुमार

हिन्दी अनुवाद: श्रीमति. के.सुभश्री एवं डॉ. अ.हि.प्रकाश

निर्मित समर्थन: श्री. संजय कुशवाहा

प्रमाण: कपास नई खोज अंक-2, खंड-5, 2014, भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

प्रकाशन टिप्पणी: यह समाचार पत्र आनलाईन <http://www.cicr.org.in/News Letter.html> में उपलब्ध है।

कपास नई खोज एक खुला उपयोग कपास समाचार पत्र है।

कपास नई खोज - के.क.अ.सं, समाचार पत्र केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र.
कार्यालय: पांजरी, एल.पी.जी. बॉटलिंग प्लॉन्ट के पास, वर्धा रोड, नागपुर- 441 108.

दूरभाष: 07103-275536 फैक्स: 07103-275529; E-mail: cicrnagpur@gmail.com

